सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का दशम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् प्रो. वैद्य बनवारी लाल गौड़ एवं डॉ. विश्वावसु गौड लिखित 'महर्षि सुश्रुत के गुरु दिवोदास धन्वन्तरि' लेख में आयुर्वेद के प्रवर्तक धन्वन्तरि के विषय में प्रचलित विविध मतों का विश्लेषण करते हुये देवदास धन्वन्तरि के ऐतिहासिक व्यक्तित्व को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। शोधच्छात्रा योगिन्द्रा देवी द्वारा लिखित 'योगसिद्धान्तचन्द्रिका में अवतारवाद की अवधारणा' शीर्षक शोधलेख में ईश्वर के अवतारों के विषय में योगशास्त्र सम्मत चिन्तन की प्रस्तुति की गयी है। इसी क्रम में गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'आयुर्वेद का एक संग्रहग्रन्थ 'प्रतापसागर'' शोधलेख में प्रतापसागर ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। डॉ. सरोच कोचर द्वारा लिखित 'मोक्ष मार्ग का सोपान : तप' शोध लेख में मनुष्य की उन्नति के लिये तप एवं साधना की प्रक्रिया को जैनमतानुसार प्रस्तुत किया गया है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा